

1969 का इज़राइल-पैराग्वे योजना

1969 में, इज़राइल ने गाजा से 60,000 फलस्तीनियों की स्वैच्छिक आप्रवासन को प्रोत्साहित करने के लिए एक गुप्त पहल शुरू की, जिसका लक्ष्य 1967 के छह-दिवसीय युद्ध के बाद एक जनसांख्यिकीय रणनीति के रूप में था। इस योजना को 29 मई, 1969 को शिन.टाफ/24 निर्णय के माध्यम से औपचारिक रूप दिया गया था, जिसमें प्रधानमंत्री गोल्डा मेयर और मोसाद प्रमुख ज़वी ज़मीर सहित वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे। इस योजना ने फलस्तीनियों को वित्तीय प्रोत्साहन, भूमि, नौकरी और सांस्कृतिक एकीकरण समर्थन के साथ विदेश में एक नया जीवन देने का वादा किया था। हालांकि, केवल 30 व्यक्ति ही स्थानांतरित किए गए थे, इससे पहले कि 1970 में एक हिंसक घटना के बाद यह योजना विफल हो गई, जिसने इसकी असफलताओं को उजागर किया। शामिल फलस्तीनियों के लिए यह अनुभव गहरे धोखे से चिह्नित था: उन्हें ब्राजील में भविष्य का वादा किया गया था, लेकिन इसके बजाय उन्हें पैराग्वे में बिना वादा किए गए संसाधनों या समर्थन के छोड़ दिया गया। यह लेख उनकी कहानियों पर केंद्रित है ताकि इस असफल नीति की मानवीय लागत को उजागर किया जा सके।

योजना का ढांचा और वादे

मोसाद द्वारा मध्यस्थता और गैड ग्रीवर के स्वामित्व वाली इज़राइली ट्रैवल एजेंसी पात्रा के माध्यम से समन्वित इस पहल ने गाजा के फलस्तीनियों को एक आकर्षक पैकेज की पेशकश की: एकमुश्त \$100 का भुगतान (आज के हिसाब से लगभग \$750), पूरी तरह से कवर की गई यात्रा लागत, मेजबान देश में तत्काल निवास, पांच साल के भीतर नागरिकता का मार्ग, कृषि भूमि, रोजगार के अवसर, और सांस्कृतिक एकीकरण के लिए समर्थन, जिसमें भाषा सहायता शामिल थी। अल्फ्रेडो स्ट्रोएसनर के तानाशाही शासन के तहत पैराग्वे ने प्रति व्यक्ति \$33 के भुगतान के लिए आप्रवासियों को स्वीकार करने के लिए सहमति दी, जिसमें पहले 10,000 के लिए \$350,000 का अग्रिम भुगतान था, यह कल्पना करते हुए कि वे कृषि विकास के लिए श्रमिक के रूप में काम करेंगे।

फलस्तीनियों के लिए ये वादे विशेष रूप से आकर्षक थे। 1969 में गाजा आर्थिक ठहराव और इज़राइली कब्जे के दबावों का सामना कर रहा था, जिसने ब्राजील में एक नई शुरुआत की संभावना को - जो अक्सर पात्रा के भर्ती प्रयासों में उजागर किया गया था - बहुत आकर्षक बना दिया। एजेंटों ने इस कार्यक्रम को एक संरचित पुनर्वास के रूप में विपणन किया, जिसमें नौकरियां, भूमि के टुकड़े, और पुर्तगाली सीखने या सांस्कृतिक एकीकरण में मदद शामिल थी, जो उन व्यक्तियों को लक्षित करते थे जो स्थिरता के लिए बेताब थे। ब्राजील का वादा, इसकी स्थापित अरब डायस्पोरा और आर्थिक अवसरों के साथ, उस वास्तविकता के साथ तीव्र विपरीत था जो उनकी प्रतीक्षा कर रही थी।

फलस्तीनी विवरण: धोखा दिया गया और छोड़ दिया गया

फलस्तीनी विवरण एक स्पष्ट विश्वासघात को प्रकट करते हैं। एक जीवंत कथा महमूद से आती है, एक फलस्तीनी जिसे पात्रा के माध्यम से ब्राजील में काम और भूमि के आश्वासन के साथ भर्ती किया गया था, जिसमें पुर्तगाली सीखने और एक जीवंत समुदाय में एकीकृत होने के लिए समर्थन शामिल था। उसे दस्तावेज और एक हवाई टिकट प्राप्त हुआ, केवल असुनसियन, पैराग्वे में पहुंचने पर यह पता चला कि उसे धोखा दिया गया था। न ब्राजील था, न नौकरी, न भूमि, और न ही सांस्कृतिक एकीकरण के लिए समर्थन - केवल \$100 का मामूली भुगतान और निवास कागजात जो बहुत कम व्यावहारिक मूल्य के थे। महमूद की कहानी उन कुछ लोगों द्वारा सामना किए गए धोखे का प्रतीक है, जिन्होंने भाग लिया, जो खुद को एक अपरिचित देश में बिना संसाधनों या समुदाय के परित्यक्त पाया।

अन्य विवरण इस परित्याग की भावना को दोहराते हैं। स्थानांतरित किए गए 30 फलस्तीनियों को पैराग्वे के भाषाई और सांस्कृतिक परिदृश्य - जो गुआरानी और स्पेनिश द्वारा प्रभुत्व में था - में बिना वादा की गई भाषा सहायता के नेविगेट करना पड़ा। वादा की गई कृषि भूमि कभी साकार नहीं हुई, और कोई रोजगार कार्यक्रम स्थापित नहीं किए गए। प्रतिभागियों को लगा कि उन्हें गाजा छोड़ने के लिए "ठगा" गया, उनकी संरचित पुनर्वास की उम्मीदें अलगाव और उपेक्षा की वास्तविकता से टूट गई। सांस्कृतिक एकीकरण का वादा, जो एक नए समाज में अनुकूलन के लिए महत्वपूर्ण था, पूरी तरह से अनुपस्थित था,

जिसने व्यक्तियों को एक ऐसे देश में अपने लिए जूझने के लिए छोड़ दिया जहां कोई फलस्तीनी डायस्पोरा समर्थन प्रदान करने के लिए नहीं था। यह परित्याग उनकी विश्वासघात की भावना को और गहरा करता था, क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि वे भू-राजनीतिक युद्धाभ्यास का हिस्सा थे, न कि वास्तविक अवसरों के प्राप्तकर्ता।

1970 का दूतावास गोलीबारी: टूटे वादों पर प्रतिक्रिया

योजना का पतन 4 मई, 1970 को असुनसियन में इज़राइली दूतावास में एक नाटकीय घटना से तेज हुआ। दो फलस्तीनी आप्रवासियों, तलाल अल-दिमासी और खालिद दरविश कस्साब ने दूतावास की कर्मचारी एडना पीर को गोली मारकर हत्या कर दी, एक ऐसा कृत्य जिसे अक्सर विदेश में फलस्तीनी आतंकवाद का पहला उदाहरण कहा जाता है। हालांकि, संदर्भ एक अधिक जटिल कहानी का सुझाव देता है। फलस्तीनियों ने दूतावास से सहायता मांगी थी जब एक वादा किया गया मोसाद एजेंट - जो अचल संपत्ति और काम के अवसरों की व्यवस्था के लिए जिम्मेदार था - प्रकट नहीं हुआ। जब राजदूत ने उन्हें खारिज कर दिया और उनकी याचिकाओं को अनदेखा कर दिया, तो उनकी निराशा हिंसा में बदल गई।

यह घटना "आतंकवाद" लेबल के बारे में सवाल उठाती है। पुरुषों के कार्य, हालांकि दुखद और अनुचित, भूमि, काम और समर्थन के अपूर्ण वादों पर निराशा में निहित प्रतीत होते हैं। यह महसूस करते हुए कि उन्हें इज़राइल और पैराग्वे दोनों ने छोड़ दिया है, उनका हमला एक नियोजित राजनीतिक हिंसा का कृत्य कम और विश्वासघात और उपेक्षा की प्रतिक्रिया अधिक था। गोलीबारी ने योजना को अंतरराष्ट्रीय जांच के सामने उजागर किया, जिसके परिणामस्वरूप अरब राज्यों ने संयुक्त राष्ट्र में शिकायतें कीं और पहल को रोक दिया गया। इसने फलस्तीनी निराशा की गहराई को भी रेखांकित किया, क्योंकि टूटे हुए वादों ने नाराजगी और हताशा को बढ़ावा दिया।

अपूर्ण वादों की मानवीय लागत

अपूर्ण वादों ने शामिल फलस्तीनियों पर गहरा प्रभाव डाला:

- आर्थिक तबाही:** \$100 का भुगतान पैराग्वे में आजीविका स्थापित करने के लिए पूरी तरह से अपर्याप्त था, जहां नौकरियां या भूमि प्रदान नहीं की गई थीं। महमूद जैसे प्रतिभागियों को तत्काल कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, बिना किसी साधन के अपने आप को बनाए रखने के लिए।
- सांस्कृतिक और सामाजिक अलगाव:** भाषा समर्थन या सांस्कृतिक एकीकरण कार्यक्रमों के बिना, फलस्तीनी गुआरानी और स्पेनिश बोलने वाले पैराग्वे समाज में अनुकूलन करने के लिए संघर्ष करते थे। फलस्तीनी समुदाय की अनुपस्थिति ने उनकी अलगाव को और बढ़ा दिया, जो ब्राजील की अरब डायस्पोरा में वादा किए गए एकीकरण के विपरीत था।
- मनोवैज्ञानिक विश्वासघात:** धोखा - ब्राजील का वादा लेकिन पैराग्वे भेजा जाना - ने विश्वास को कम कर दिया। यह महसूस करना कि वे इज़राइल की जनसांख्यिकीय रणनीति में मोहरे थे, ने प्रतिभागियों को शोषण और हानि की भावना के साथ छोड़ दिया, जो गाजा में वापसी की असमर्थता से और बढ़ गया।
- जबरन विस्थापन:** कार्यक्रम की "स्वैच्छिक" प्रकृति संदिग्ध थी, क्योंकि गाजा के आर्थिक दबावों ने भागीदारी को मजबूर किया। उनके गंतव्य के बारे में गुमराह किया जाना और आगमन पर परित्यक्त होना विस्थापन की भावना को और गहरा करता था।

ये विवरण, हालांकि योजना के छोटे पैमाने तक सीमित हैं, शोषण के एक पैटर्न को उजागर करते हैं। योजना की विफलता इसकी इन प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में असमर्थता से उत्पन्न हुई, जिसने फलस्तीनियों को फंसा हुआ और पैराग्वे को आगे की भागीदारी के प्रति सतर्क छोड़ दिया।

नैतिक और भू-राजनीतिक निहिताथ

योजना की नैतिक खामियां स्पष्ट थीं। आलोचक, जिसमें फलस्तीनी समर्थक शामिल हैं, तर्क देते हैं कि यह जबरन विस्थापन के करीब थी, जो गाजा की हताशा का शोषण करके फलस्तीनी आबादी को कम करने की कोशिश कर रही थी। मोसाद की भागीदारी, जिसने सौदे की मध्यस्थता की और उसी समय के आसपास पैराग्वे में नाजियों का शिकार बंद कर दिया, ने हेरफेर की धारणाओं को बढ़ाया। समझौते की गोपनीयता, जो 1970 की गोलीबारी तक छिपी रही, ने अनैतिक आचरण के आरोपों

को हवा दी। पैराग्वे, अरब देशों की प्रतिक्रिया के डर से, जल्दी से दूरी बना ली, और स्ट्रोएसनर ने घटना के बाद योजना को रद्द कर दिया।

फलस्तीनियों के लिए, यह अनुभव विस्थापन और टूटे विश्वास की कथा को मजबूत करता था। योजना का छोटा पैमाना - केवल 30 व्यक्तियों का स्थानांतरण - इज़राइल के जनसांख्यिकीय लक्ष्यों में बहुत कम योगदान देता था, लेकिन प्रतिभागियों पर स्थायी घाव छोड़ गया। मानवीय लागत एक ऐसी नीति के परिणामों को दर्शाती है जिसने मानवता पर रणनीति को प्राथमिकता दी।

विरासत और सबक

1969 की इज़राइल-पैराग्वे योजना इज़राइली-फलस्तीनी संघर्ष में एक फुटनोट बनी हुई है, लेकिन इसके कुछ प्रतिभागियों पर इसका प्रभाव गहरा है। ब्राजील में भविष्य का वादा - भूमि, काम और सांस्कृतिक समर्थन के साथ पूर्ण - केवल पैराग्वे में परित्यक्त होने के लिए, भू-राजनीतिक प्रयोगों की मानवीय लागत को प्रकट करता है। 1970 की दूतावास गोलीबारी, एक वादा किए गए मोसाद एजेंट की अनुपस्थिति और राजदूत की अस्वीकृति से शुरू हुई, धोखा दिए गए लोगों की हताशा को दर्शाती है और “आतंकवाद” जैसे सरल लेबल को चुनौती देती है।

जैसे-जैसे समान आप्रवासन प्रस्तावों पर चर्चा उभरती है, ये कहानियां एक चेतावनी के रूप में कार्य करती हैं। जनसांख्यिकीय लक्ष्यों द्वारा संचालित नीतियों को 1969 की असफलताओं को दोहराने से बचने के लिए पारदर्शिता और वास्तविक समर्थन को प्राथमिकता देनी चाहिए। शामिल फलस्तीनियों के लिए, यह योजना अपूर्ण वादों की कठोर याद दिलाती है, उनकी आवाज विस्थापन और धोखे के सामने जवाबदेही की मांग करती है।